# 'उपसंहार'

## : उपसंहार :

अपनी सृजनशील प्रतिभा से कथा-शिल्प में नए-नए तथा सार्थक प्रयोग करनेवाले प्रयोगशील उपन्यासकार और प्रखर समीक्षक डॉ.देवेश ठाकुर का नाम आधुनिक हिन्दी साहित्य जगत् में अपना विशेष महत्व रखता है। मैंने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विवेचन करने का प्रयास प्रथम अध्याय के अंतर्गत किया है। उनके व्यक्तित्व की पहचान के लिए प्रारंभ में देवेश जी का प्रामाणिक जीवन परिचय प्रस्तुत किया है। उनके जीवन परिचय एवं व्यक्तित्व को देखकर हम यह कह सकते हैं कि देवेशजी का सम्पूर्ण जीवन संघर्षमय रहा है। संघर्ष में भी वे दृढ़ निश्चयी और आशावादी रहे हैं। आर्थिक कठिनाइयों का सामना करते हुए वे पारिवारिक दायित्व के प्रति सजग हैं, फिर भी परिवार से सम्बन्ध विच्छेद करने का उनका निर्णय "स्व" की रक्षा के प्रयास स्वरूप मानना चाहिए। विवाह तथा संतान को लेकर उन्हें अपने जीवन में पूर्ण रूप से संतोष हैं। संवेदनशील देवेशजी अपने जीवन में जातियता और साम्प्रदायिकता के विरोध में रहे हैं। उनका व्यक्तित्व संपन्न तथा आदर्श हैं। वे स्पष्ट, मुखर तथा हँसमुख हैं। उनके असाधारण व्यक्तित्व के अनुशीलन से हमें जीवन के संघर्ष पथ पर ईमानदारी के साथ अथक परिश्रम करने की प्रेरणा मिलती है। उनकी सफलता का रहस्य उनकी ईमानदारी और परिश्रम है। प्रतिभा की अपेक्षा अभ्यास को उन्होंने अधिक महत्व दिया है।

देवेशजी के कृतित्व के आकलन से यह ज्ञात होता है कि वे एक प्रगतिशील एवं मानवतावादी लेखक हैं। हिन्दी में उनके जैसे बहुत कम लेखक हुए हैं, जिन्होंने समान रूप से समीक्षा और रचना दोनों का इतनी सार्थकता से निर्वाह किया हो और इतनी सफलता और स्वीकृति पायी हो। देवेशजी ने उपन्यास, कहानी, कविता, एकांकी, निबन्ध, शोध-ग्रंथ आदि सभी रचनाओं में संघर्षवादी तथा आस्थावादी स्वर ध्वनित किया है। अपने जीवन की यथार्थता और स्वानुभूतियों को अपनी रचनाओं में चित्रित करने में सफल हुए है। इसप्रकार उनका मानवतावादी व्यक्तित्व तथा दृष्टिसंपन्न कृतित्व निश्चित रूप से युवकों तथा रचनाधर्मियों के लिए प्रेरणादायी रहेगा।

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत मैंने कथावस्तु का स्वरूप तथा उसकी गुण-विशेषताओं का विवेचन करते हुए "अन्ततः" उपन्यास की कथावस्तु की समीक्षा एवं शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डाला है।

कथाविन्यास की दृष्टि से "अन्ततः" उपन्यास यथार्थवादी सामाजिक उपन्यासों की परम्परा में रखा जा सकता है। यह उपन्यास सामाजिक यथार्थ के साथ-साथ मानवीय सम्बन्धों और उनके एकायामी मनोविज्ञान को प्रस्तुत करता है। कथावस्तु का मूल संवेध स्त्री-पुरूष सम्बन्धों की जटिलता को महानगरीय परिवेश में प्रस्तुत करना है। जिन सम्बन्धों का उद्भव एवं विकास उपन्यासकारने प्रस्तुत किया है वह अलौकिक या आदर्शवादी न होकर भौतिक एवं यथार्थवादी है। स्त्री-पुरूष सम्बन्धों की महत्ता, आवश्यकता और अनिवार्यता को उपन्यासकार ने चर्चा का प्रमुख विषय बनाया है जो पाठकों की रोचकता को बढ़ाता है। विशेषतः इसमें नारी के अन्तर्द्वन्द्व और उसके निर्णय की वस्तुपरक कथापर बल दिया है। आधुनिक शिक्षित भारतीय नारी अपना परम्परागत रूप बदल कर वैयक्तिक एवं आर्थिक स्वतन्त्रता की ओर तेजी से बढ़ रही है। लेकिन, आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नारी की भावुकता उसके जीवन को और भी संघर्षमय बना देती है। परम्परागत संस्कार तथा परिवेश को तोड़नेवाली मध्यवर्गीय वसुधा अपनी स्वतन्त्र अस्मिता के लिए झुझती हुई कभी सफल तो कभी असफल होती दिखाई देती है। उपन्यासकार उसके बाहरी ही नहीं अर्न्तमन की अतलगहराई में झाँकने का प्रयास करता है। पुरूष प्रधान समाज में जीनेवाली संघर्षशील शिक्षित नारी को उपन्यासकार केवल भावना के प्रवाह में बहनेवाली नारी के रूप में ही चित्रित नहीं करता, बल्कि स्वाभिमान और सम्मान की चाह से उद्वेलित नारी का मानसिक विश्लेषण भी वह करता है।

मनोविश्लेषणात्मक भूमि को आधारभूत बनाकर उपन्यासकार ने वसुधा और पसरीचा के माध्यम से स्त्री-पुरूष सम्बन्धों का सूक्ष्म चित्रण किया है। पाश्चात्य प्रभाव के परिणामस्वरूप आधुनिक जीवन में स्त्री-पुरूष सम्बन्धों में जो परिवर्तन हुआ है उसे विश्लेषित करने में यह उपन्यास पूर्णतः समर्थ है। इसकी मौलिकता बेजोड़ है।

उपन्यास की कथावस्तु का वास्तविक मर्म उसके "अन्ततः" शीर्षक में निहित है, जो उपन्यास की कथावस्तु तथा उसके मूल प्रतिपाध्य से गहरा सम्बन्ध रखता है। शीर्षक को पढ़ते ही लेखक के उद्देश्य का संकेत भी मिलता है और पाठक के मन में कथावस्तु को जानने की जिज्ञासा जाग उठती है। विभिन्न शीर्षकों में विभाजित इस कथा का अन्तिम पड़ाव ही "अन्ततः" इस शीर्षक से पुरा हुआ है। यह लेखक का बुध्दिचातुर्य ही तो है। "अन्ततः" यह शीर्षक संक्षिप्त, सार्थक एवं आकर्षक बन पड़ा है।

तृतीय अध्याय के अंतर्गत चरित्र चित्रण का स्वरूप, महत्व, उसकी विशेषताओं एवं प्रणालियों पर प्रकाश डाला है। लेखक ने जिन पात्रों का चरित्रांकन किया हैं वे उपन्यास को अपने उद्देश्य की ओर अग्रसर करने में सफल हुए हैं। उपन्यास के प्रमुख पात्रों की योजना स्त्री-पुरूष के सम्बन्धों को महानगरीय परिवेश में परखने के उद्देश्य से हुई है।

"अन्ततः" के सभी पात्र महानगरीय जीवन जीनेवाले मध्यवर्गीय पात्र है। सीमित पात्रों की इस कथा के प्रमुख पात्र वसुधा और पसरीचा है। उपन्यास की नायिका वसुधा आधुनिक शिक्षित नारी वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है और नायक पसरीचा लेखक के विचारों का। इन दोनों के अन्तर्द्वन्द्वों, उनकी संवेदनाओं तथा विवशताओं को मनोवैज्ञानिक ढंग से व्यक्त करना ही लेखक का लक्ष्य रहा है। प्रेमविवाह की असफलता के कारण वसुधा जीवन के उतार चढ़ाव में चाहे असफल क्यों न हो पर वह स्वतन्त्र अधिकारों के लिए संघर्षरत है। इसी संघर्ष के कारण ही वह अपने पति से सामंज्यस्य कर नहीं पाती और उनसे अलग हो जाती है। साहस और आत्मविश्वास के अभाव में वह पुरूष साहचर्य की तलाश में भटकती है। उसके मन की अस्थिरता ही उसकी व्यक्तिगत समस्या का कारण बनी है जिससे वह पाठकों की सहानुभूति प्राप्त नहीं कर सकती। लेकिन उसकी मानसिकता एवं विवशताओं को गहराई से देखा जाय तो हम समझ पाते हैं कि उसकी अस्थिरता के लिए यह पुरूष प्रधान समाज ही जिम्मेदार है। लेखक ने उसके जीवन की जटिलता एवं विषमता के साथ उसके मन की संवेदना को भी गहराई के साथ अंकित किया है।

उपन्यास का प्रमुख पुरूष पात्र पंकज पसरीचा बुढ़ापे में जीवन साथी की तलाश की चाह रखनेवाले हर प्रौढ़ सज्जन मनुष्य का प्रतिनिधित्व करनेवाला चरित्र है। वसुधा की तरह पसरीचा भी प्रेम विवाह की असफलता के कारण अन्तर्द्वन्द्व और उलझनों भरा जीवन जीते है। शुरू से अन्त तक अन्तर्द्वन्द्वों से ग्रस्त होकर भी वे स्थिर दिखाई देते है। उनके द्वारा लेखक ने कुशल एवं सक्षम सम्पादक के गौरव और गरिमा का निर्वाह करवाया है। वे गम्भीर, शान्त और सम्पादन कार्य में दक्ष व्यक्ति हैं। उनके विचार लेखक की कार्य के प्रति निष्ठा और ईमानदारी के संकेत देते हैं। अतः पसरीचा प्रस्तुत उपन्यास का आदर्श चरित्र है जो पाठक के मनपर अपने गरिमामय व्यक्तित्व का असर छोड़ जाता है।

पसरीचा के बाद दूसरा सशक्त पात्र शालिनी का है जो एक नीड़र और साहसी प्रेमिका के रूप में हमारे सामने आती है। व्यावहारिक, बौध्दिक जीवन की प्रतीक शालिनी परम्परा से हटकर आधुनिक विचारों में विश्वास करनेवाली क्रांतिकारी महिला है। जिसके माध्यम से लेखक ने अन्तर्जातीय विवाह पर बल दिया है। अतः शालिनी और पसरीचा के माध्यम से चिंतन की एक नयी दिशा का संकेत हमें मिलता है।

आधुनिक युग की विकृत चेतना को राघवन के चरित्र द्वारा प्रस्तुत किया है। राघवन स्वार्थी लोलुप और भ्रष्ट चरित्र है। आधुनिक युग में ऐसे ही लोगों की भरमार दिखाई देती है। सुभाष बुध्दिजीवी नवयुवक है जो आज की पीढ़ी के नये विचारों का प्रतिनिधित्व करता है किन्तु उसके चरित्र में जीवन के प्रति ठोस मूल्यों का अभाव है। इसप्रकार लेखक ने उपन्यास के सभी पात्रों का सफल चरित्रांकन अपनी अपनी जगह सही तरिके से किया है। कथावस्तु को आगे बढ़ाने तथा लेखक का उद्देश्य सफल करने में इन पात्रों का योगदान महत्वपूर्ण रहा है।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत उपन्यासकार ने "अन्ततः" में जिन समस्याओं का चित्रण किया है उसका विस्तृत रूप से विवेचन किया है। इसमें स्त्री-पुरूष के प्रेम से जुड़ी मनस्थितियों, भावदशाओं तथा नैतिक समस्याओं के चित्रण को प्रमुखता मिली है। प्रेमविवाह,

यौन-तृप्ति, व्यक्तिवादी जीवन दृष्टिकोण के माध्यम से समाज की परम्परागत खोखली, मिथ्या मान्यताओं और नैतिक धारणाओं के प्रति तिखा विद्रोह मिलता है। आज के उपन्यास में आधुनिक नारी की वैयक्तिक और आर्थिक स्वतन्त्रता का सबल समर्थन हो रहा है। शिक्षा से नारी अपने अधिकारों के प्रति सचेत हुई है। आर्थिक स्वतन्त्रता एवं आत्मसम्मान की भावना ने उसे संघर्ष के लिए प्रेरित किया है। नारी के इस संघर्षरत जीवन का तथा उसके मनोविज्ञान का देवेश जी ने सूक्ष्मता से चित्रण किया है। नारी मन की भावनाओं, विवशताओं और उसके जीवन की विभिन्न स्थितियों आदि को चित्रित कर प्रस्तुत उपन्यास यथार्थ में आधुनिक नारी की जीवन गाथा को ही प्रकट करता है। आज शिक्षा के परिणामस्वरूप नारी आत्मसम्मान की भावना से मुखरित हो उठी है। नैतिकता में उदारता बरतनेवाली बुध्दिवादी मनोवृत्ति की आधुनिक नारी अपने स्वतन्त्र विचारों पर किसी का आघात सहन नहीं करती इसका उदाहरण वसुधा, शालिनी और पद्मा है। उपन्यास के नारी पात्रों में आधुनिक नारी के लिए अनुकूल सहनशीलता, स्वाभिमान और साहस भरा हुआ है। सभी अपनी स्वतन्त्र अस्मिता और आत्मविश्वास की खोज में रहते हैं, इसी खोज के दौरान पुरूष प्रधान समाज में उन्हें अनेक बाहरी तथा भीतरी समस्याओं से जूझना पड़ता है।

लेखक का भौतिकवादी जीवन दर्शन और यथार्थवादी दृष्टिकोण प्रणय के क्षेत्र में स्त्री-पुरूष के शारीरिक सम्पर्क को अनिवार्य मानता है। उन्होंने वसुधा, पसरीचा, शालिनी के माध्यम से मुंबई के आधुनिकतम वातावरण में नवीन मानवीय सम्बन्धों की खोज का प्रयास किया है। स्त्री-पुरूष सम्बन्धों के नवीन आयाम से प्रेम की समस्या उभरी है। अतः प्रेम व्यक्ति की समस्या है और विवाह समाज की। व्यक्ति के जीवन में प्रेम कितना ही महत्त्वपूर्ण हो पर समाज स्वीकृति विवाह बन्धनमें ही है। यही स्वीकृति प्रेमविवाह तथा अन्तर्जातीय विवाह समस्या का कारण बन गयी है। स्त्री-पुरूष के बीच स्थापित नैतिक मूल्यों में परिवर्तन आया है। आज समर्पण, समन्वय और समझदारी के अभाव में पति-पत्नी सम्बन्ध टूट रहे हैं, जिससे स्त्री-पुरूष सम्बन्धों में नवीन आयाम निर्माण हो रहे हैं।

सम्बन्धों का आधार मानवीय होने के कारण उनमें किसी प्रकार की जाति-धर्म, भेद या अन्य कोई शर्त को स्वीकार नहीं किया जाता। शालिनी ऐसे सम्बन्धों को तोड़ना चाहती

है। अधिक स्वच्छन्दता का उपभोग न कर सकने पर पद्मा दाम्पत्य जीवन के विघटन का कारण बनती है। स्वतन्त्र अस्तित्व चेतना और आत्मसम्मान की भावना के कारण सामंज्यस्य के अभाव में वसुधा वैवाहिक विच्छेद का कारण बनती है। अतः "अन्ततः" के सभी आधुनिक नारी पात्र व्यक्तिवादी धरातल पर अत्यंत स्वच्छंद विचारों के तथा विद्रोह से भरे हैं।

स्त्री-पुरूष के बीच बदलते संदर्भ में मानव जीवन की शाश्वत प्रवृत्ति कामभावना ने अश्लिलता का रूप धारण किया है। सम्बन्धों में स्थूलता आने से अश्लिलता बढ़ गयी है। परिणामस्वरूप व्यक्ति काम-अतृप्ति, प्रेम विफलता और सामाजिक बन्धनों में अन्तर्द्वन्द्वों से पीड़ित हो गया और अपने संस्कार परिवेश तथा रूढ़ियों के प्रति विद्रोही बन गया है।

औद्योगिक क्रान्ति एवं वैज्ञानिक उन्नत्ति से नगरों एवं महानगरों का जीवन दिन-ब-दिन व्यस्त तथा जटिल बनता जा रहा है। आधुनिक महानगरीय जीवन असुरक्षित, एकाकी एवं विवशताओं से भरा है। इसी महानगर में अपनत्व को पाने के लिए आदमी विभिन्न समस्याओं से जूझता है फिर भी अन्त तक उसकी स्थिति अस्पष्ट ही बनी रहती है। महानगर की चकाचौंध और आकर्षण भरी दुनियाँ में भी व्यस्तता के कारण आदमी अकेलापन महसूस करता है। इसी अकेलेपन से छुटकारा पाने के लिए वह होटल और क्लब का सहारा लेता है। आज महानगर में घर के बाद दूसरा स्थान इन होटलों और क्लबों का ही है। जहाँ पाश्चात्य संस्कृति तेजी से पनप रही है।

महानगरीय जीवन दर्शन के साथ लेखक महानगर की अन्य समस्याओं पर भी प्रकाश ड़ालता है। औद्योगिकरण से महानगर की आबादी बढ़ती गयी और परिणामस्वरूप महानगर में आवास की समस्या खड़ी हो गयी है। मकान बनाने के लिए जमीन की जरूरत है और जमीन की किमत दिन-ब-दिन बढ़ती ही जा रही है। उपन्यासकार इस बात की ओर संकेत करता हैं। आज के जमाने में पैसा ही सबकुछ है। मनचाही सुविधाएँ जुटाने के लिए आदमी पैसों के पीछे भागकर भ्रष्ट बन रहा है। उपन्यासकारने समाज जीवन और व्यक्ति जीवन में बढ़ती हुई अर्थ की प्रभुता, अर्थ लिप्सा, आदि का मार्मिक चित्रण किया है। आधुनिक सभ्यता

में पैसा एक अभिशाप बनकर आया है। उसका प्रतिनिधिक उदाहरण है राघवन।

महानगर में उच्चवर्ग का अन्धानुकरण करने के प्रयास में मध्यवर्ग में दिखावटीपन की समस्या उभर रही है। आर्थिक क्षमता न होते हुए भी उच्च वर्गीय सभ्यता को अपनाया जा रहा है। लेखक पद्मा के माध्यम से इस समस्या को प्रकट करते है।

स्वतंत्र भारत की प्रशासनिक एवं राजनितिक व्यवस्था उत्तरदायित्व के अभाव में भ्रष्टता की सीमा पार कर गयी है। लेखक ने इसका तीखे शब्दों में चित्रण किया है। देश की व्यवस्था में अन्याय, अत्याचार भ्रष्टाचार के फैलने से प्रजातंत्र का ढाँचा ही बदल गया है। विकास के हेतु विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से समाज में सुधार लाने का प्रयास किया गया किन्तु भ्रष्ट नेता और अफसरों के कारण यह योजनाएँ असफल हो गयी। देश में चारों ओर आक्रोश और हिंसा फैल गयी है। बेरोजगारी के कारण आज की युवा पीढ़ी निराश होकर नशीली एवं पलायनवादी बनती जा रही है। लेखक के मन में देश की व्यवस्था के प्रति विद्रोह की भावना दिखाई देती है। उन्होंने भ्रष्ट राजनेताओं पर करारा व्यंग्य करके उनसे निर्माण समस्याओं पर प्रकाश डाला है। सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं से घेरा हुआ आदमी अपने अस्तीत्व की खोज के लिए संघर्षरत दिखाई देता है। लेखक ने महानगरीय सामाजिक समस्याओं के संदर्भ में व्यक्ति का मूल्यांकन करने का प्रयास किया है, जिसमें उन्हें काफी सफलता मिली है।

पंचम अध्याय के अंतर्गत मैंने "अन्ततः" उपन्यास के प्रस्तुति शिल्प का विवेचन किया है। देवेशजी को मानवहृदय की भावनाओं की सूक्ष्म जानकारी है इसी कारण वे मानव मन के रहस्यों को सशक्त भाषा में अभिव्यक्त करने में सफल हुए हैं। भावानुकूल शब्दों के प्रयोग से "अन्ततः" उपन्यास के प्रभाव में अमित वृध्दि हुई है। उपन्यास की भाषा में शब्दप्रयोग के विभिन्न रूप तत्सम, तद्भव, अरबी, पारशी, अंग्रेजी आदि प्रयुक्त हुए हैं। परिणामतः भाषा में सरलता एवं सहजता आयी है। भाषा सौन्दर्य के साधन विशेषण, रूपक, उपमान

प्रतीक,बिम्ब आदि का प्रचुर मात्रा में प्रयोग हुआ है। भाषा में सुन्दरता लाने के लिए मुहावरें, सुक्तियाँ आदि उपकरणों का भी कलात्मक प्रयोग हुआ है।

देवेशजी ने कथ्य की नवीनता के सफल संप्रेषण हेतु शब्दों के विविध रूपों के साथ नये वाक्य गठन का भी सूत्रपात किया। महानगरीय जीवन की विभिषिका के चित्रण के लिए प्राचीन परम्परागत वाक्यविन्यास की शैली पर्याप्त नहीं लगी, अतः उन्होंने वाक्यविन्यास में परिवर्तन करके उसे एक नया अर्थ प्रधान किया है। कहीं क्रिया-विहीन वाक्य तो कहीं टूटे बिखरे तथा छोटे-छोटे वाक्य कहीं अन्त में कर्तावाले तो कहीं अनिश्चित क्रम वाले वाक्य तो कहीं पात्रों की परिस्थिति, मानसकि उद्वेलन के अनुसार अधूरे वाक्य एवं मौनाभिव्यक्तिवाले वाक्यों का सार्थक एवं सशक्त प्रयोग किया है। अतः देवेशजी की भाषा आधुनिक तणाव एवं इंद्ग्रस्त जीवन को व्यक्त करने की क्षमता रखती हैं। भाषापर उनका जबर्दस्त अधिकार है इसीलिए ही उन्होंने विचारों की सफल अभिव्यक्ति के लिए उचित भाषा का प्रयोग किया हैं। यह भाषा पात्रों की अवचेतन मन की अस्पष्ट बातों को स्पष्ट करने में सफल हुई है। उन्होंने जहाँ और जैसा चाहा वैसा ही भाषा को गढ़ा, सँवारा और एक नया रूप दिया हैं। पात्रों की मनोदशा, टूटन और बिखराव के अनुसार अलग अलग प्रकार के वाक्यों का प्रयोग करके देवेशजी ने महानगरीय भौतिकवादी जीवन के विविध आयामों का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। अतः देवेशजी की भाषा सहज, सरल, संवेदनशील एवं स्वाभाविक है।

भाषा का प्रस्तुतीकरण शैली है। उपन्यास की भाषा के साथ शैली अलग होते हुए भी अनिवार्य रूप से जुड़ी है। प्रस्तुत उपन्यास की शैली कथ्य के अनुसार सहज तथा उपयुक्त प्रतीत होती है। प्रमुखता से मनोविश्लेषणात्मक शैली में लिखे इस उपन्यास में संवाद एवं पत्र शैली अत्यंत रोचक और प्रभावशाली बन पड़ी है। पात्रों के जीवन के यथार्थ को प्रकट करने में संवाद एवं पत्र सफल बन पड़े हैं। इसमें घटनाओं का संयोजन कम हुआ है लेकिन अर्न्तद्वन्द्व का सूक्ष्मता से चित्रण हुआ है। वसुधा एवं पसरीचा का आत्मकथन कई जगहों पर एकालाप बन गया है। नाटकीयता देवेशजी की औपन्यासिक कला की विशेषता है, जिसका प्रभावपूर्ण चित्रण हुआ है। डायरी शैली, सांकेतिक शैली, विवरणात्मक, विसादृश्य तथा व्यंग्यशैली

के कारण अभिव्यक्ति कौशल में संप्रेषणीयता एवं कलात्मकता आ गयी है।

समग्रतः "अन्ततः" के प्रस्तुतीकरण में शिल्पविधान की नई संभावनाओं का प्रयोग देवेशजी ने सफलता के साथ प्रस्तुत किया है। उन्होंने अपनी प्रतिभा एवं अथक परिश्रम से शैली शिल्प को नए आयाम प्रस्तुत कर प्रस्तुति शिल्प में मौलिक परिवर्तन उपस्थित किया है। देवेशजी ने अपने नित्य नवनवीन उपन्यास शिल्प से शैली क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। अतः "अन्ततः"उनका एक नवीन प्रयोग है। जो हिन्दी उपन्यास को नवीन गति एवं दिशा प्रदान करनेवाला साबित हो सकता है।

मेरे इस लघु-शोध प्रबन्ध की मौलिकताएँ निम्नलिखित है -

१. संपूर्ण विवेचन उपलब्ध सामग्री तथा प्रत्यक्ष अध्ययन पर आधारित है।

२. उपन्यास की कथा एवं चरित्रों को व्यावहारिक दृष्टि से सामाजिक परिप्रेक्ष्य में परखने की कोशिश की है।

३. भाषा का सूक्ष्म अध्ययन करके, हर शब्द की जाति एवं प्रकार का उल्लेख किया है।

<u>उपलब्धियाँ</u> :-

(१) डॉ.देवेश ठाकुर का भौतिकवादी जीवन दर्शन और यथार्थवादी दृष्टिकोण प्रणय के क्षेत्र में स्त्री-पुरूष के शारीरिक सम्पर्क को अनिवार्य मानता है। वसुधा और पसरीचा की कहानी पाठकों को केवल अश्रुविगलित ही नहीं करती बल्कि, समर्पण की भावना से युक्त स्वास्थ्यपूर्ण दाम्पत्य जीवन के लिए पाठकों को प्रवृत्त करती है।

(२) पुरूष प्रधान समाज के कारण आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नारी की भावुकता उसके जीवन को और भी संघर्षमय बना देती है। देवेशजी, आधुनिक संघर्षशील नारी को केवल भावना के प्रवाह में बहनेवाली नारी के रूप में ही चित्रित नहीं करते, बल्कि स्वाभिमान और सम्मान की चाह से उद्वेलित नारी का मनोविश्लेषण भी प्रस्तुत करते हैं।

वसुधा की कहानी पढ़कर कोई भी समझदार शिक्षित नारी भावुकता और प्रेम के आवेश में ऐसा निर्णय नहीं लेगी या ऐसी भूल नहीं करेगी जिसमें उसका व्यक्तित्व ही समाप्त हो जाय या पुरूष की शर्तोंपर जीने के लिए बाध्य हो जाय। प्रस्तुत उपन्यास की यह एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

(३) केवल अपने ही सुख की चिन्ता करनेवाले पति पत्नी अपने सहजीवन में समर्पण की चाह रखते हैं। उसमें जब समर्पण और समझदारी का अभाव होता है तब पति-पत्नी का साथ साथ रहना मुश्किल होता है। ऐसे समय सबसे पहले उन्हें बच्चों के सुख-दुःख का और उनके भविष्य का विचार करना चाहिए। इसमें देवेशजी ने वसुधा और अतुल का पुत्र अविनाश के माध्यम से यह सीख दी है।

(४) कर्तव्यनिष्ठ, गरिमामयी व्यक्ति पंकज पसरीचा और शालिनी के माध्यम से चिंतन की एक नयी दिशा का संकेत हमें मिलता है।

(५) हर औपन्यासिक कृति में शिल्पगत भिन्नता ही देवेशजी की औपन्यासिक कला की विशेषता रही है। उनका "अन्ततः" उपन्यास इसका परिचायक है।

<u>अनुसन्धान की नई दिशाएँ</u> :-

डॉ.देवेश ठाकुर के कृतित्व पर निम्न दिशाओं में अनुसन्धान किया जा सकेगा-

१. "सामाजिक परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में देवेश ठाकुर और उनका उपन्यास साहित्य।"

२. "डॉ.देवेश ठाकुर के उपन्यासों में चित्रित आधुनिक शिक्षित नारी का मनोविज्ञान।"

३. "डॉ.देवेश ठाकुर के उपन्यासों में चित्रित स्त्री-पुरूष सम्बन्धों के बदलते आयाम।"

—o—o—o—o—